

Padma Shri



SWAMI SIVANANDA

Swami Sivananda has dedicated his life for the welfare of the human society. His simplest ways of disciplined and well-regulated life with early morning Yoga, oil free boiled diet and self-less service to the mankind in his own way has given him disease free and tension free longest life. He demonstrates his life as an exemplary lesson rather than preaching.

2. Born on 8th August, 1896 at Sylhet district of undivided India, Swami Sivananda lost his mother and father at the age of six. For abject poverty his beggar parents could feed him mainly with boiled rice water during his childhood days. After the funeral rites, he was brought to his Guruji's Ashram at Nabadwip in West Bengal. Guru Omkarananda Goswami brought him up, imparted all practical and spiritual education including Yoga without school education. He has been a positive thinker throughout his life, so after losing his parents, the realization came to his mind - 'the world is my home, it's people are my fathers and mothers, to love and serve them is my religion'. He is chasing that mission till today to serve the underprivileged in different parts of the country - in North East India, at Varanasi, Puri, Haridwar, Nabadwip and so on.

3. For the last 50 years, Swami Sivananda has been serving 400-600 leprosy affected beggars with dignity at Puri by personally meeting them at their hutments. He perceives them as living God and serves them with best available items. He arranges different materials like food items, fruits, clothes, winter garments, blankets, mosquito nets, cooking utensils etc. based on their expressed need. He encourages others present on the occasion to hand over different items to the affected people to make them feel the joy of giving, so that later on they are motivated to do such types of humanitarian work in their respective areas.

4. Swami Sivananda's healthy and long life has drawn attention of different national and international media like BBC, AFP, History channel, Times of India, Dainik Jagaran, AajTak, Assam Tribune etc who have published articles on him, including his commitment for motivating countrymen for covid vaccination after immunizing himself at the age of 125 years. Corporate hospitals across the nation have performed complimentary master health check up to assess structural and functional status of his vital organs and systems to observe his lifestyle. In presence of the doctors and management teams in a conference hall, in query of the secret of his longest life, along with sharing his desireless, simple life, he demonstrates different Yoga and exercise as means of his healthy and long life.

5. Swami Sivananda has been honoured with various awards including the Yoga Ratna Award on 20th June 2019 at Bengaluru. He was the senior most participant of the country to participate in yoga demonstration on 21st June, the World Yoga Day in 2019. He was awarded with Basundhara Ratan Award by Respect Age International for his contribution to the society on 30 November 2019.

पद्म श्री



स्वामी शिवानन्द

स्वामी शिवानन्द ने अपना जीवन मानव समाज के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया है। उनकी अनुशासित साधारण जीवन शैली और प्रभातकालीन योग, बिना तेल वाले उबले आहार वाले सुनियोजित जीवन तथा उनकी अपनी मानव मात्र के प्रति निःस्वार्थ सेवा, उनके रोग मुक्त और चिंता मुक्त लम्बे जीवन का आधार है। उपदेश न देते हुए उन्होंने अपने जीवन को ही अनुकरणीय बना लिया है।

2. 08 अगस्त, 1896 को अविभाजित भारत के सिल्हट जिले में जन्में, स्वामी शिवानन्द ने मात्र छह वर्ष की अवस्था में ही अपने माता-पिता को खो दिया था। बहुत ज्यादा गरीबी के कारण उनके भिक्षा लेकर जीवन-यापन करने वाले माता-पिता उन्हें बाल्यकाल के दौरान मुख्यतया उबले चावल ही खाने के लिए दे पाते थे। उनके अन्तिम संस्कार के बाद, उन्हें उनके गुरु के पश्चिम बंगाल में नवद्वीप में स्थित आश्रम लाया गया। गुरु ओंकारनंद गोस्वामी ने उन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया और बिना किसी विद्यालयी शिक्षा के योग सहित सभी व्यवहारिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया। वे अपने संपूर्ण जीवनकाल के दौरान एक सकारात्मक चिंतक बने रहे, इसलिए अपने माता-पिता को खोने के बाद उनके मस्तिष्क ने यह महसूस करना शुरू किया कि — 'यह विश्व ही मेरा घर है, यहां के लोग मेरे माता-पिता हैं, उनको प्यार देना और उनकी सेवा करना ही मेरा धर्म है'। वे देश के विभिन्न हिस्सों-पूर्वोत्तर भारत, वाराणसी, पुरी, हरिद्वार, नवद्वीप और बहुत सी आम जगहों में वंचितों की सेवा कार्य में आज भी रत हैं।

3. पिछले 50 वर्षों से स्वामी शिवानन्द भिक्षा से जीवन-यापन करने वाले 400-600 कुष्ठ रोगियों की पुरी में सेवा कर रहे हैं, वे स्वयं उनके घरों में जाकर उनसे मिलते हैं। वे उन्हें साक्षात भगवान स्वरूप मानते हैं और यथा उपलब्ध वस्तुओं को उन तक पहुंचाकर उनकी सेवा करते हैं। वे लोग जिस प्रकार की इच्छा जाहिर करते हैं, उस आधार पर वे उनके लिए खाद्य सामग्री, फल, कपड़े, ठंड के कपड़े, कंबल, मच्छरदानी, रसोई के बर्तनों इत्यादि जैसे सामानों को पहुंचाते हैं। वे उस अवसर पर उपलब्ध लोगों को प्रभावित जन को अलग-अलग सामान देने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि उन्हें भी दान का सुख प्राप्त हो सके जिससे कि वे अपने संबंधित क्षेत्रों में ऐसे मानवीय कार्यों को करने के लिए प्रेरित हों।

4. स्वामी शिवानन्द के स्वास्थ्य और दीर्घ आयु ने बीबीसी, एएफपी, हिस्ट्री चैनल, टाइम्स आफ इंडिया, दैनिक जागरण, आज तक, असम ट्रिब्यून इत्यादि जैसे विभिन्न राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय मीडिया का ध्यान खींचा है, इन्होंने 125 वर्ष की आयु में स्वयं का टीकाकरण करवाने के पश्चात कोविड टीकाकरण के लिए देश के लिए लोगों को प्रेरित करने की उनकी प्रतिबद्धता सहित उन पर कई लेख प्रकाशित किए हैं। देशभर के कॉरपोरेट चिकित्सालयों ने कंपलीमेंटरी मास्टर हेल्थ चेक-अप किया है ताकि उनके महत्वपूर्ण अंगों और प्रणालियों की संरचनात्मक तथा कार्यात्मक स्थिति का आकलन किया जा सके। एक सम्मेलन कक्ष में चिकित्सकों और प्रबंधन टीम की उपस्थिति में, अपने इच्छाहीन, साधारण जीवन को साझा करने के साथ अपनी दीर्घायु के रहस्य को बताने के क्रम में, उन्होंने अलग-अलग योग और व्यायाम का प्रदर्शन किया जो कि उनके स्वास्थ्य और दीर्घायु होने का आधार है।

5. स्वामी शिवानन्द को बेंगलूरु में दिनांक 20 जून, 2019 को योग रत्न पुरस्कार सहित और कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वे वर्ष 2019 में 21 जून को विश्व योग दिवस के दौरान योग प्रदर्शन में भाग लेने वाले देश के सबसे वरिष्ठ प्रतिभागी थे। उन्हें रिसपेक्ट एज इंटरनेशनल ने दिनांक 30 नवंबर, 2019 को समाज के प्रति किए गए उनके योगदान के लिए बसुंधरा रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया था।